M.A. Semester – I
Philosophy CC - 01
Unit. — V

Prof. Ragini Kumari
Prof. & Head
P.G. Centre of Philosophy
Maharaja College, Ara

Theory of Error according to Mimansa Philosophy (Part-II)

परन्तु भट्ट इस मत से पूर्णतः सहमत नहीं है, उनका कहना है कि जब हम रज्जु में सर्प देखते हैं और कहते हैं कि यह सर्प है तो यहाँ उद्देश्य और विधेय दोनों सत्य है जो रस्सी वर्तमान है, यह साँप की कोटि में लायी जाती है। संसार में सत्ता दोनों की है। भ्रम दो सत्ता किन्तु पृथक पदार्थ के संसर्ग को लेकर होता है, न कि विषय को लेकर, जो वास्तविक पदार्थ है। भट्ट मीमांसकों का यह सिद्धान्त विपरीत ख्यातिवाद कहलाता है।

अतः भट्ट मीमांसक भ्रम को स्वीकार करते हैं, परन्तु उनका कहना है कि भ्रम विषयों को लेकर नहीं, उनके संसर्ग को लेकर होता है परन्तु दोनों सम्प्रदाय विषय से सहमत हैं कि भ्रम का प्रभाव ज्ञान की अपेक्षा हमारे व्यवहार पर अधिक पड़ता है। इसके अतिरिक्त दोनों ही भ्रम को अपवाद रूप समझते हैं। परन्तु कुछ अपवादों के रहते हुए भी नियम ही मान्य समझा जाता है। इस प्रकार मीमांसकों के अनुसार भ्रम की व्याख्या हो जाती है।

आलोचना → अद्वैत वेदान्ती मीमांसा के भ्रम सम्बन्धी ज्ञान यानी दो विभिन्न अनुभूतियों के पहचान के अभाव के कारण ही भ्रम उत्पन्न होता है उसकी वे कुछ आलोचना करते हैं। उनका कहना है कि रामानुज या प्रभाकर का जो वस्तुवादी सिद्धान्त है, जिससे यह सिद्ध होता है कि भ्रम का मूल कारण विभेदाग्रह है अर्थात् दो भिन्न अनुभूतियों के बीच का अन्तर की अज्ञानता है, इसमें भ्रम की सत्यता नहीं होती। अगर ये दोनों अनुभूतियाँ हमारे मन में रहती है तो उनके अन्तर का ज्ञान हमें अवश्य रहता है कि यह साक्षात् वस्तु की है या स्मृति की। अतः विभेदाग्रह का प्रश्न ही नहीं उठता है। कुमारिल के अनुसार मन का प्रत्यय ही मन के बाहर साक्षात् अनुभूति वस्तु पर ही आरोपित रहता है। इसी कारण शिप खण्ड को उससे भिन्न चाँदी के रूप में देखते हैं, अतः यह निरर्थक है, लेकिन अद्वैत वेदान्ती का कहना है कि ऐसा मानने से वस्तुवादी सिद्धान्त ही खण्डित हो जाता है। अद्वैत वेदान्ती शंकर का मत है कि अज्ञान के कारण ही हम संसार के वस्तुओं को सत्य या असत्य रूप में देखते हैं। उनका कहना है कि सत्य तो यह है कि ये सारी चीजें एक दृष्टि से सत्य और दूसरी दृष्टि से भ्रमपूर्ण है। जिसे अद्वैत विचारक अनिर्वचनीय ख्यातिवाद कहते हैं। शंकर यह मानते हैं कि सारी सृष्टि माया की सृष्टि है और यही हमारी अज्ञानता का कारण है, जिससे बाध्य होकर हम ये समझते हैं कि सारा जगत सत्य और वास्तविक है। यद्यपि कि ये सारा जगत प्रतीत मात्र है, वास्तविकता का

अभाव है, यह सब माया की सृष्टि है।
अज्ञानता के कारण ही इसे सत्य और वास्तविक मानते हैं। जब हम माया से प्रभावित हो जाते हैं और अज्ञानता जब हमें घेर लेती है तो हमारी बुद्धि मुग्ध हो जाती है और तब हम संसार को सत्य के रूप में देखने लगते हैं। यद्यपि की ये सारा संसार माया की सृष्टि है जिसके कारण जो मूल सत्ता है, जो इस जगत का आधार है उसपर एक आवरण पड़ जाता है और फिर हम उसके स्वरूप को नहीं जानते। ये अज्ञानता जो माया के कारण उत्पन्न होती है वह न केवल वास्तविक स्वरूप को विकृत कर देती है बल्कि साथ-ही-साथ विक्षेप भी पैदा कर देती है। हम रस्सी को सर्प के रूप में नहीं देखते बल्कि जो संसार के अधिष्ठाता है उसके ऊपर भी आवरण पड़ जाता है और उसके रूप को हम पहचान नहीं पाते हैं। रस्सी को जिस तरह हम सर्प मान लेते हैं उसी प्रकार हम ब्रह्म को न पहचान कर सारा संसार हमें सर्प के समान दृष्टिगोचर होने लगता है। ये अज्ञानता से उत्पन्न भ्रम सत्य और असत्य दोनों से परे है।

इस प्रकार हम पाते हैं कि अद्वैत वेदान्ती मीमांसकों के 'ख्याति सिद्धान्त' की आलोचना करते हुए 'भ्रम' का कारण अज्ञान या माया को सिद्ध करते हैं।

X——————X